

DPN 6278

Title : लक्ष होम विधान / LAKṢAHOṂAVIDHI

Run. No. 6969

Cat. No.

Micro. No.

Subject ~~कर्मकाण्ड~~
Karmakāṇḍa

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 21 x 9.5

Folios 107 Lines (in a page) 11

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

मधुसूदनशर्मा / राजेन्द्रशेखर

Date: NS / SS / VS / KS 78. (708)?

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

Fol. 1 b: अथादिनारायणप्रसादोपरि सुवर्णकलशध्वजारोहणलक्ष्मिहोमविधानं

Fol. 80 a: इत्यादिनारायणमेतरेषावाग्निहोमप्रसादोपरिसुवर्णकलशध्वजारोहणलक्ष्मिहोमविधानं समाप्तं ॥

Fol. 85 a: इति कक्षहोमस्थाग्नि कुण्ड प्रवाहनं विधानं समाप्तं ॥ शुभं ॥

Fol. 86 a: विष्णोः प्राणप्रतिष्ठाविधिः लिख्यते ॥

Fol. 106 b: इत्यादिनाशयणमते जीव्यासप्राणप्रतिष्ठाविधिः समाप्तः ॥ शुभं ॥

इति नामा... अथ भक्त्युत्पत्तिः...
 मित्रियगतिः... नन्दमयः...
 नोमिहविंशिलोकसुखदं निर्वोदल...
 वरुण...
 हृत्तयिहृत्त...
 विहयिप्रोयका...
 थयोत्रग...
 नागमर्त्य...
 धनुः...
 लीगुरु...
 न्या...

लक्ष्मण...
 यूसी...
 चन्दना...
 ॥...॥
 कानन...
 पृथ्वी...
 यति...
 खलुम...
 सुवमान...
 मायनी...
 धूके...

॥साधितायुधिवीथनगन्ध रात्रिहालपिता।पूर्वेजन्मकृतीयायेसूकर्तृदृष्टकर्तृवत्।रुद्र
जन्मकृतीयायमहिजन्मयु यत्कर्तृ।यत्कर्तृकर्मसूत्रेणजन्मजन्मानकवत्।कर्मपुत्र
काजाजायतदिविधकूल।सर्वकर्मनादिवत्कुरुनिवसवेदा॥हरेयकाल॥
धीगयुधनययुनमधुलसि वरुणेश्वर॥ ॥तमाम
धुलपूजन॥उत्तरवधुमधुलायनमः॥वायु॥उं धर्मो यर॥
पुनः॥उं हानायनमः॥नेष्टर॥उं वेवाथयश॥वायो॥
उं नृपयोनयनमः॥षीलान॥ ॥उं लोहूनदावाय२॥पु
नः॥उं मरुददावाय२॥दक्षिण॥उं सूकमेदावाय२॥यष्टि
म॥उं मोददावाय२॥उल्लव॥तस्याह्यनवलोकयाल॥उं
हृदायनमः॥हृदादिजुधुद्वोर्न॥तस्याह्यनव॥उं



२

नमो ७

वैष्णवय२॥उं नवमिहायनमः॥उं वनाहाय२॥उं कपिलाय२॥उं विष्णव२॥मध्या॥
उं वन्दमधुल॥उं मूर्धमधुलाय॥उं वक्रिमधुलाय॥उं शुभमधुलाय॥वैष्णवमूलमन्त्र
वशुभमि॥यदनादमसिद्धवद्वोपूययज्ञायदीनाहृद नरुल्लयकान्ननेवश
धूपदीपदाययत्॥दक्षिणवर्केश्वरधृत्वाकीवायकसूत्र नृनिका१०००॥नचना
रुगल्लयपूयादिशिवनिधाय॥उं मयावालाह॥उं मयादि॥यजमानस्यगि शुभमा
मकुधनिमित्तार्थं जूखधुमधुलाकालायरुद्रमद्येनमः॥उं दक्षिणवर्केश्वर
धृत्वादीनादियुनिगीनदद्येवगृहापदमधुल्लयानमायुना॥ ॥मूलमकुधज
य॥दक्षिण॥उं मनाद्रुनियुगिहा॥कार्त्त॥उं मधुलायनमः॥सर्वकर्मलाधियाय
य॥रुद्रवृष्टस्त्रय्यायविष्णवृयायनमः॥१॥सफसागवयर्थेनसफदीप
समन्तिर्न॥जूखधुमधुलाकारिमधुलर्ननमाम्यहं॥२॥चतुर्वर्गसर्मनर्मकर्मवीसाग
वर्तर्ग॥नमः॥धिसामवित्तकुमनात्रम्यनमाम्यहं॥३॥यथाकाममहाविद्यामाधयूय

बुधा। मकागमयूया समरुद्योतनाहमधुलनमः॥४॥ विषययाया विरिगलसहजान
 नलकपी। हानकिया समोवर्त विदुपेमधुलनमः॥५॥ यस्यानादिनचाकोसिनमधु
 वधुवर्जित। अखधुमधुलाकारमधुलनमः॥६॥ अविकावायधुद्वायनिखा
 ययवमात्मन। अगनाधनना। कियकनमधुलनमः॥७॥ नर्वमधुलनकृताअष्ट
 नकननकिती। गुन्यादाहुमधुलनिषयुपधिमाननः॥८॥ **गुनियुनमधुलन**
वः॥ **॥यनरुनगुनिकानयन॥** उंनभागुनवविष्कव॥ उंअखधुमधुलाकारे॥१॥ ३
 अकथामधुगलववाद्यानागीनमाचन। नकलं यनसेयाकेनसेधीगुनवनमः॥
 २॥ अहानगिमिजाधेयाहानाअनसलाकया। अखधुमी। लनयननसेधीगुनवन
 मः॥३॥ अनादिधात्रसमानयाधिविधिसहगवानमः॥४॥ हानवैशा। यज्ञोपधि
 विधापिन॥५॥ दूर्वकयातिथादीअनियकलामलगय। अकथामहानसेवृत्तिन
 सेधीगुनवनमः॥६॥ हाननकिसमाधुनलमाता। विरुवर्ण। अकिसूकियदागा
 नगुनवन्दयथाहवि॥७॥ गुनगुननर्ववधवागुनगुनानः॥ अनाधिकर्मसाध

अविशुद्धतेतमान्यहं॥१॥ गुनद्वैकागुनचिह्नं नुनदयामहयवगुनदवजगत्सर्वतमे
 गुनवनमः॥२॥ आदयाधुयसादनजायगवद्विभक्तमा। विक्कावदनिर्गयननसेधीगुन
 वनमः॥३॥ ययययसमूहयनयसवेकयजगत्। अस्मिन्नयनिधिर्गसवेनसेधीगुनव
 नमः॥४॥ अहयसादेकनमयनसिद्धारवासाहं। नामयहवसामीजअपीवोदददाउ
 म॥५॥ अखधुमधुलाकारयोगयननरुक्तली। अचनगुसमाखानसचननरावथग
 ॥६॥ यथानिवस्तथाविद्यायथाविद्यानथगुन॥ निवविद्यागुनवर्णवयुजयसहपीदल
 ॥७॥ नास्तिगुनयनादवानास्तिगुनयनागतिनास्तिगुनयन॥ अनास्तिवर्णयथागु
 न॥८॥ निहगनार्थसुगुनैयधमयमाकसा। अखयिदीयवृय। नमानमस्यामियदय
 दवगलाववृयैरुवकदकको॥९॥ गुनैयधममागलथाकदुदुकासग। नर्वमुलाय
 निषयुदुकिमुकिसवायूया॥१०॥ **॥गुनियुनगुन॥** **॥यजमानसहस्रदय**
नमहेसुधु॥ उंकायधुद्विः॥११॥ उंवाकधुद्विः॥१२॥ उंविमधुद्विः॥१३॥
 नर्वमधु॥ उंकायवाक्विमधुद्विः॥१४॥ उंलंगनिः॥१५॥ सर्वरुतानामिखा॥ कर्मध

٥٦

[illegible]

कलणसुदिलादिवलिर्जुजावर्नां शुक्लान् स्नाननियोजय ॥ च कलसिन्दूरयः ॥ यवी
तयुयसिनलेकृता ॥ २॥ निकलनवायविधिः समाप्तः ॥ ॥

उं नमो नारायणाय ॥ ततः ॥ यामः ॥ स्नानादिनित्यकर्मकावय ॥ यत्तु मधुयने फलदि
निवा ॥ यजमानन ॥ ३॥ ॥ यजमानस्यादिनावाय ॥ यथासाक्षाद्यविमूवर्क
ल ॥ धजावत्राहनलक्रानियरुनिमित्तार्थं सूर्यायार्थं नमः ॥ ३॥ उं माहात्म्यकावति
॥ पर्य २ ॥ ॥ मूलावायः ॥ विजादियाकार्य ॥ ॥ आवायः ॥ ॥ यजमानसंकावर्न्या
सज्जय ॥ यज ॥ ॥ आत्मायुज ॥ ॥ वलिद्वयद्वय ॥ ॥ यजनामादिकवर्णनवद्रुकाय ॥
हृदुकादि ॥ अग्निनाम्नादि ॥ ॥ यजमानादिमातृकावलि ॥ ३॥ उं कौनवसिंहाय वलि
गृह्ण स्वाहा ॥ नवसिंहवलि ॥ विष्णुकनवलि ॥ ३॥ विष्णुकननाय वदं मया पृथग्
यदीययुजावलि गृह्ण २ सुवेविधिवाचय २ यज्ज्वर २ नमः ॥ स्वाहा ॥ वद ॥ ३॥
मघानात्वा ॥ उं नमो विभू ॥ ३॥ अम्भज्जम्भि ॥ ३॥ रुयग ॥ १०० ॥ ३॥ धृतिद्युत ॥ ३॥ विष्णव

धृक् ॥ ३॥ वाचोदि ॥ ॥ धृयदीयजायका ॥ ॥ निर्वोर्णनिर्विकल्पिता ॥ अम्भज्जम्भि
सज्ज ॥ नवसिंहवलिमधुयं यामय ॥ ॥ विष्णुकनवलि स्नानक्रिय ॥ ॥ नित्यलि
युजर्नमधुयवाक् ॥ ॥ आवायः ॥ तन्यासंकावय ॥ ॥ यीहजसमर्थयधृत्वा ॥ दानम
कुल्यादय ॥ ३॥ उं आकाशस्थानमः ॥ दिगम्भक्रिया ॥ ३॥ गदायतय २ ॥ ३॥ उं इन्द्रसिलि
क ॥ ३॥ सवस्त्रय २ ॥ दक्ष ॥ ३॥ दानवधिय २ ॥ मधु ॥ ३॥ उं यज्ज्वर २ नमः ॥ दक्ष ॥ ३॥ विजयार्थ
२ ॥ वाम ॥ ३॥ दहली २ ॥ दहली ॥ मूलनावलाय ॥ ३॥ उं दक्षकाधन ॥ तनानावाचमद
याफुवावीहिवजः ॥ सर्वार्थे कथय ॥ ॥ यत्तु मधुयने विष्णुदक्षयादय ॥ ॥ ३॥ वा
तालसंस्तिताय जकुविदियानविक्रम ॥ विष्णुकनवयकावर्ननधुनुलया
रूय ॥ ३॥ उं वीहयधुमति ॥ यविष्णु ॥ ॥ दहलीमसुकलर्णयुजय ॥ ३॥ उं मसुय
दमासनेनमः ॥ धान ॥ ३॥ यज्ज्वर २ नमः ॥ कवकावदमवधुसूर्यावना ॥ सुवाहसंधुताय वदं
वामतर्जुनिविशर्ग ॥ निर्विघ्नयद्रुकायार्थं तर्जुनीधायतसदा ॥ ३॥ उं वक्राहदी ॥ ३॥ ॥
तर्जुनीहस्तसंयुक्तवसुत्रयमहाकर्म ॥ सर्वविघ्नकार्यं त्रयम्भुमूर्धनम ॥ ३॥

75

[illegible]

न२

मयलं॥ उं रु दी विष्णु॥ उं रु लाय वहा रु साय सूत्रा धिय तय २॥ ध्यान ४॥ उं ने ज व ग ग जा
नू र ति॥ उं ग गा न मि न्द्र॥ **सूत्र**॥ उं रु रु मु म रु ना दी क ति॥ उं न मा रु ग व त नू ति न्द्रा
य म दि र्ग मू का य रु ट॥ उं रु म्मा य २॥ उं ना ज्ञा य २॥ उं व रु ॥ ६२॥ उं कू मू द ध जा य २
॥ उं जू मा क मि॥ उं य लो वा य २॥ उं जू वं रु प॥ उं रु या य २॥ उं वृ ह स्य त रु दि॥ उं मि रु जा
रु न॥ उं य व रु क षू॥ उं ग म स या य २॥ उं ग म्भ द्वा ज्ञा॥ उं स र्व वा य २॥ उं रु मा नू ड॥ उं
दू वो य २॥ उं का धु ला धु ॥ उं यं य सृ गाय २॥ उं व रु ह न॥ उं व रु य २॥ उं रु य वि
रु ॥ **च न्द्र ना दि व लि**॥ उं ज या च वि ज या ॥ उं व रु ण द रु त य ग रु धा॥ रु गी व थी च का
वि न्दी न रु ण ॥ रु गी मू त रु वे क ॥ यू र्व व रु षू रु ला या दि गे द त ता॥ य ता का धु ज
क र्ण च स र्वे द वा दि सं क्ति ता॥ ता नू मा मि स म सा रु सो रु न द्वा व मा णि ता॥ त स र्वे स
नु द व र्था व लि गृ ह्ण रु मे स दा॥ उं सृ य ति रु ॥ रु व॥ उं य त र्प ०॥ धू य दी य जा य रु
॥ म हा वी था म हा का य उ द य नि म रु गि वि॥ वि रु या य रु ना मा नि स र्वे द व न मा
रु न॥ द व दान व ग रु वी य रु ना रु स य रु ग॥ स र्वे स मा ध व रु रु रु रु रु रु रु मे स दा

76

जाया नमः कृष्ण कृष्ण च च धारी ना किय दा यिनी ॥ उँ विष्णु धूर्त की ॥ सा ॥ उँ यीन व धूर्त च पुत्रो
 इमं द्वा लं का न रु मिता ॥ सर्वे भक्ति कवी ध वी धारी च वन मा मुक्त ॥ उँ विष्णु श ॥ ध्यान ॥ उँ कमल
 मन च उँ द्वा इ ध ज मू ग दारु या ॥ उँ क मा मू हि दा ध वी वि धारी क क मा ल रा ध वी वृ छि
 य दा यिनी ॥ उँ दि वा वा ॥ सा ॥ कमल सा सखा सी ना च उँ ह स धु डा रु या ॥ उँ क मा मू हि दा
 ध वी वि धारी च न मा मुक्त ॥ उँ सा म व दा य २ ॥ ध्यान ॥ उँ बाल सृ शो य मा सा म य धि म य वि
 हा व य ॥ य मू क च रि द धी च जू क मा ला क म पु ल ॥ उँ स न ज्ञा या ॥ उँ ॥ उँ द्वा म क उँ व
 रं का दा र्ज कृ ण धा रि त ॥ य म न र व ध रं ध वं दा य ना धि य रि स्म न ॥ उँ जू क ना जा ॥ उँ पु का
 य २ ॥ उँ जू ता ल्य वि ॥ उँ न नै ध्र वा य २ ॥ उँ न ना ध वी ॥ उँ ग धु क २ ॥ उँ स मू डे ला नू ॥ उँ को नि
 २ ॥ उँ न दी रु ध्या ॥ उँ वृ ष ॥ उँ क ग वा ला य २ ॥ उँ द्वा ॥ उँ न नै २ ॥ उँ रु का य २
 ॥ जू द्वा र वा या ॥ उँ ग ध य ग य २ ॥ उँ ग ध ना ला ॥ उँ स न स र २ ॥ उँ वा व का न ॥ उँ म हा ल
 २ ॥ उँ धी ध र ॥ उँ द्वा इ ति क ॥ उँ को म ॥ क पि ला य २ ॥ ध्यान ॥ उँ द या दि ल्य स का र्ण पि न
 नृ न्म धू ला च न ॥ च उँ जू मू दा ना ॥ अ य धा शो नू य न्म रि त ॥ नि त व मु क नी र्थ च मू का ल

सुंनकिहसकं॥ उंजुनिर्मूर्द्धा॥ कायं॥ अणययुवमं वकं पिझाकं पिझकं कीमं किहसं
महंजु॥ कागसंवागंयनमं॥ उंउयवदाय॥ उंजनादेनाय॥ उंमधयतय॥ उंम
धुनात्वा॥ उंसवस्वले॥ उंयावकान॥ उंमहाल॥ उंभीधन॥ उंकमूयारवांयजय॥
॥ उंजुस्माकमिन्द॥ उंयल्लवाय॥ उंजुधम्॥ उंकगाय॥ उंयहस्यनक॥ निजुज॥ उंय
वृक्षम्॥ उंममयाय॥ उंमधदाय॥ उंदूद्योय॥ उंकाधु॥ काधु॥ उंसर्वयाय॥
उंरुमानुदाय॥ उंयवसूराय॥ उंवकाहनी॥ उंवकाये॥ उंलंजविष्ट॥ चन्दनादि॥
वलि॥ यनिष्ट॥ उंसूयतिष्ठारुव॥ उंयनयं॥ धूपदीपजयस्तु॥ उंजयत्रय॥
॥ रुखा॥ अयदाय॥ ॥ तना॥ नेष्टयदाय॥ उंनेष्टयदाय॥ नासादि॥
उंनत्वाय॥ मि॥ अयुक्तनी॥ उंरुदविष्ट॥ उंशानायुधि॥ उंवृत्तवृत्ताय॥ उंवत्तावि॥
उंयुष्टिदाय॥ उंदायादवी॥ उंकुंनेष्टयारवमरुसाय॥ कसाधिवनय॥
न॥ अकमेयं॥ वावूरुनीलात्तलदलेय॥ कया॥ योविमथायं॥ यिवर्कनाकसं

वरी॥ उंयकदवी॥ कायं॥ नेष्टययुवमं॥ कृष्ण॥ रुद्रसामहावल्लभं॥ काय॥ रुद्र
परावपनाकसायनमानमं॥ उंउयवदाय॥ उंयुमनालाय॥ उंमृयाय॥
मुयकृ॥ उंमगयतय॥ उंमगानात्वा॥ उंसवस्वले॥ उंयावकान॥ उंमहाल॥
॥ उंभीधन॥ उंतामनधजाय॥ उंजुस्माकमिन्द॥ उंयल्लवाय॥ उंजुधम्॥
उंकगाय॥ उंयहस्यनक॥ उंनिजुज॥ उंयवृक्षम्॥ उंममयाय॥ उंमधदाय॥
॥ उंदूद्योय॥ उंकाधु॥ काधु॥ उंसर्वयाय॥ उंरुमानुदा॥ उंयवसूराय॥
उंवकाहनी॥ उंवकाये॥ उंलंजविष्ट॥ उंचन्दनादिवलि॥ यनिष्ट॥ उंसूयति
ष्ठारुव॥ उंयनयं॥ धूपदीपजयस्तु॥ उंजयत्रय॥ रुतिनेष्टयदा
यावेनी॥ ॥ तना॥ वायदाय॥ उंवायदाय॥ नासादि॥ उंनत्वाय॥
मि॥ अयुक्तनी॥ उंरुदविष्ट॥ उंशानायुधि॥ उंवृत्तवृत्ताय॥ उंवत्तावि॥
उंयुष्टिदाय॥ उंदायादवी॥ उंकुंनेष्टयारवमरुसाय॥ कसाधिवनय॥

नाधियमयशः॥ ध्यानशास्त्रायीतद्विगच्छायविलालभजयन्निधि॥ यावत्तुनैवक
 तानाहविधस्तेसमीनर्ण॥ उंनवेवाय॥ कार्ण॥ वायवायुनूयः कृष्णध्वजहस्ताम
 हावतलसवसाधत्मक॥ ध्रुववायुदवनभासुत॥ उंउयवदाय॥ उं हवायु
 क्रायदु॥ उंमाधवायु॥ उंगनूजाय॥ उं गंधवायु॥ उं गंधानां॥ उं सव
 स्वहो॥ उं यावकान॥ उंमहालक्ष्मी॥ उं धीधन॥ उं सर्वेनगधजाय॥ उं गस्मा
 क॥ उं यन्त्रवायु॥ उं गंधस्मू॥ उं कृष्णाय॥ उं वृहस्पति॥ उं मित्रं॥ उं धवृक्षं॥ २२
 उं गमयाय॥ उं गंधदाना॥ उं दूर्वाय॥ उं काकुत्था॥ उं सध्याय॥ उं व
 मावदाय॥ उं यंचसूजाय॥ उं लक्ष्मी॥ उं नकाय॥ उं लंजविष्ट॥ यन्नादि
 वलि॥ मयतिष्ठारुव॥ उं धनयन्त्र॥ धूपदीपजायस्तोत्रं॥ उं गायत्रयहंनव॥
 उं गायत्रयहंनव॥ ॥ तदुक्ती॥ नद्यानार्चनी॥ उं ह्रीं॥ नद्यानार्चनी॥ नद्यानार्चनी॥
 दि॥ उं गत्वायामि॥ अत्युत्तमं॥ उं रुद्रं॥ उं विष्णुं॥ उं शानायुधि॥ उं शनार्कवृक्षनावध

यनमः॥ ॐ ह्रीं देवी॥ ह्रीं ईशानाय॥ त्रिभूलहस्ताय॥ सर्वभूताधिपतये॥ ध्यानं॥
 ॐ ईशानवृषभासूतं॥ त्रिभूलव्यालधारितां॥ शरच्चन्द्रावदातंचचन्द्रमौलित्रि
 लोचनं॥ तमीशानं॥ स्तोत्रं॥ ॐ ईशानं॥ जगतां नाथं॥ भुभ्रूलंधरं॥ अक्षं॥ ज
 यधरं॥ श्रीमान् वृषस्थाय॥ नमोनमः॥ ॐ उयगेजाय॥ ॐ उयवेदाय॥ ॐ विष्ण
 वेश॥ ॐ भृंगी॥ अस्त्रायफट्॥ ॐ गणपतये॥ ॐ गणानां॥ ॐ सरस्वतेश॥ ॐ पाव
 कानः॥ ॐ महालक्ष्म्येश॥ ॐ श्रीश्रुते॥ ॐ सुपुतिष्ठध्वजाय॥ ॐ अस्माकमिन्द्रः॥
 पलवाय॥ ॐ अश्वस्तूपरी॥ दजाय॥ ॐ वृहस्पते॥ द्या॥ त्रिभुजा॥ ॐ येवृक्षेण॥
 गोमये॥ ॐ गंधद्वारां॥ दुर्वायै॥ ॐ काराता॥ ॐ सर्वपाय॥ ॐ इमारुद्राय॥ पंचसू
 जाय॥ ॐ रक्षोहनं॥ ॐ रक्षायै॥ ॐ त्वंजिषिददा॥ ॐ येतेपथा॥ धूपदीपजगस्तोत्रं॥

ॐ अयं च यशः॥ इति ध्यानं द्वारपूजा॥ ततोऽध्वक्षारयशः॥ न्यासादि॥ ॐ
 तत्त्वायामि॥ ॐ अभुक्षरां॥ ॐ इदं विष्णु॥ ॐ स्योनापृथिवि॥ ॐ अश्वत्थं वृक्षं नोरतायशः॥
 ॐ चत्वारिंशं॥ ॐ पृथ्वीक्षारयशः॥ ॐ क्षारो देवी॥ ॐ अनंतं तायचक्रं हस्तायनागधिप
 तयेश॥ ध्यानं॥ ॐ अनंतं तं पुण्डरीकं क्षारं दशहतेयं तं॥ विष्णुदामप्रतीकं श्रीकृष्णं
 रं विचिंतयेत्॥ ॐ विष्णोपदा विचक्रं॥ लोचं॥ ॐ अधोभागे च वेशा नः सर्वाभरणा
 मण्डितं॥ श्रीमन्नसमास्थाय नमस्तैव कृपायाये॥ ॐ श्रीं स्वः वेनुं अस्त्राय फट्॥ ॐ वि
 ष्णुं कृमायशः॥ ॐ गतापतयेश॥ ॐ गता नंत्वा॥ ॐ सरस्वतेश॥ ॐ पावकानः॥ ॐ महालक्ष्मेश
 ॐ श्रीश्वते॥ ॐ ध्वजायशः॥ ॐ अस्माकमिन्द्र॥ ॐ पल्लवायशः॥ ॐ अश्वत्थं परीक्षितं॥ ॐ
 जायशः॥ ॐ बृहस्पतेर्यदि॥ ॐ तिभुजध्वजायशः॥ ॐ ये वृक्षेष्टा॥ ॐ गोमयायशः॥ ॐ गंधक्षारो॥
 ॐ दुर्गायै कारुण्यं॥ ॐ सर्वयायशः॥ ॐ इमारुद्रायशः॥ ॐ पंचसूत्रायशः॥ ॐ रक्षोहर्ता॥ ॐ
 रक्षायैशः॥ ॐ त्वं गोविन्द॥ वन्दनादिवलिः सुप्रतिष्ठावदामवन्तु॥ ॐ येते पथा॥ ध्व ॥ २३॥

पदीयजयस्तोत्रं॥ ॐ अयं च यशः॥ इति अधोक्षारवर्चनं॥ ॥ ततः पुण्ड्रक्षारवर्चनं॥
 ॐ पुण्ड्रक्षारयशः॥ न्यासादि॥ ॐ तत्त्वायामि॥ अभुक्षरां॥ ॐ इदं विष्णुः॥ ॐ स्यो
 नापृथिवि॥ ॐ वटवृक्षं नोरतायशः॥ ॐ चत्वारिंशं॥ ॐ स्वर्गक्षारयशः॥ ॐ
 क्षारो देवी॥ ॐ पुण्ड्रायकमण्डलं हस्ताय स्वर्गाधिपतयेश॥ ध्यानं॥ ॐ पीनं पीतं च
 तुर्वर्गं बुद्ध्यां चतुराननं॥ हंसयानं च विभूतां साक्षरं च कपाडलं॥ ॐ बुद्ध
 यज्ञानं॥ लोचं॥ ॐ पद्मयोनिं श्वेतं मूर्तिं मूर्द्धिस्थाने निवासकं॥ सृष्टिकर्ता
 त्मको नित्यं तस्यैव हृन् नमो रजते॥ ॐ श्रीं स्वः वेनुं अस्त्राय फट्॥ ॐ गोवर्द्धना
 यशः॥ ॐ श्रीवत्सायशः॥ ॐ गतापतयेश॥ ॐ गता नंत्वा॥ ॐ सरस्वतेश॥ ॐ पावका
 नः॥ ॐ महालक्ष्मेश॥ ॐ श्रीश्वते॥ ॐ ध्वजायशः॥ ॐ अस्माकमिन्द्र॥ ॐ पल्लवायशः

ॐ अम्बुसूयते गो॥ ॐ द्याय २॥ ॐ बृहस्पते द्या॥ ॐ तं भुजाय २॥ ॐ ये वक्षे ॥ ॐ
 दुर्वाये २॥ ॐ कातात् ॥ ॐ सर्वयाय २॥ ॐ इमारुद्राय ॥ ॐ पंचसूत्राय २॥ ॐ रक्षोह
 नं॥ ॐ रक्षायै २॥ ॐ त्वं जविषदा॥ वदनादिबलि॥ सुप्रतिष्ठो भवा॥ ॐ ये ते पथा॥ ध्रु
 पदीयजयस्ते नमः॥ ॐ अयं वयं॥ इति उद्गाराचनं॥ ॥ ततो मण्डपमध्ये तिष्ठ
 पूजयेत्॥ ॐ ह्रीं स्वः ह्रीं हूं वाक्त्वा विपतये बुधलो २॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं॥ ॐ हिरण्यमे
 नपात्रेण सत्यस्यापि हितं मुखं॥ यो स्यात्पुष्टो सो स्यावहं॥ ॐ ध्येन ध्वजाय बु
 धलो २॥ ध्यानं॥ ॐ चतुर्मुखं चतुर्बाहुं लंबकूर्चमहोदरं बुधलोऽस्तुतिभिः कुर्यान्ने
 दासुकुटभूषणं॥ तिमोक्षं सौम्यरूपं च सौत्ररी यो पवीतकं॥ ह्रस्वांजिनं तत
 स्तं ध्वजं त्राजिनं च वाससं भुवं कमण्डलुं वामे शक्तिं सार्यं घटं तथा॥ हं सारु

॥२४॥

टं कजस्थं वायो मघदा सनाति तं॥ गायत्रीं च वसावित्रीं मृतीं तस्यार्चयोऽस्ती
 था॥ जतिलालंबकूर्चाश्च वृद्धरूपं च तौ मवान्॥ रिक्तवक्त्रोऽक्षे कूर्क्षिं च स्वाक्ष
 माला कमण्डलु॥ ॐ आ ब्रह्म नृवाहा लो॥ स्तोत्रं॥ ॐ चतुर्वेदस्य मातुः क्रोगाय
 न्यादित्यमन्त्रितः॥ बुधरूपमहात्मानं नमस्ते नानेकपिरो॥ मूलमंत्रेण पू
 जयेत्॥ ॐ ध्वजाय २॥ ॐ अस्माकमिन्द्र॥ ॐ पल्लवाय २॥ ॐ अम्बुसूय॥ ॐ
 द्याय २॥ ॐ बृहस्पते द्या॥ ॐ तं भुजध्वजाय २॥ ॐ ये वक्षे ॥ ॐ दुर्वाये २॥
 ॐ कातात् कातात्॥ ॐ सर्वयाय २॥ ॐ इमारुद्राय॥ ॐ गोमयाय २॥ ॐ मे
 धक्षारं॥ ॐ पंचसूत्राय २॥ ॐ रक्षोहने॥ ॐ रक्षायै २॥ ॐ त्वं जविषदा॥ सु

प्रतिष्ठा वरदा भवन्तु ॥ मृतध्वजायां यत्स्थितिं तत् पूजनं ॥

॥ २४ ॥

तमः शिव नर्मणा दक इन्द्र्यं सर्व कल (ग) पूय्यथ ॥ मनु ॥ ३ ॥ सर्व समुद्रा सविग सीर्य
निजलदानवा ॥ ज्ञायानुयजमानसो इति कथ्य कावक ॥ ३ ॥ सममर्ग (ग) जमून ॥ स
र्वगम्भृ गम्भाष्टक यश्च जलादीनि भये ॥ ३ ॥ गम्भृ जय मूना येव (ग) अ वली सन रु
ती नर्मदा सिन्धु कावची जले ॥ सिं र्ग नि (ग) रूव ॥ ॥ च उदि कल (ग) पूय्य
रिथ ॥ ३ ॥ उ वक्रिने (ग) तथा द के के गे याल धने जग ॥ ल कि प्रा धरु वत पू (ग) ल की
हल मक (ग) व वा योग वा यति ध्रुव स्नान यथ क वन क ॥ पूरु को ने मूना दाम ली
ल गुरु रू (ग) ये व ॥ ग्नि क य पूरि क ध्रुव म (ग) धै सर्व सै स्ति ॥ ३ ॥ म (ग) धा ना वा य (ग) द
व ॥ स रु ना मून मा म्हा ॥ ३ ॥ र्ग नि व ला स न क ल (ग) ध्रुव नि वि मि ॥ ३ ॥ ग (ग) दा सान पूजा
क कल (ग) रु म नी ॥ यजमाने न गुरु वदनी गृहीता अ वि कि म्र यथा भा री ॥ ३ ॥
ला वा यो न धृ त गि व क रू नू ग मि ती ला क या ला रू (ग) व थ ॥ ३ ॥ च द कि व पु म
व शाम ॥ ३ ॥ उ रा रा ला क या ला ॥ ३ ॥ रा य धा स न द्वा रु व न ॥ ३ ॥ च ध रू स न क

25

[illegible]

ती। उद्धरुं सनुनाथसुखदयस्त्रिभुवनं सभयप्रासन्नताय विष्टेयसन्नददने
 दिज। नर्वविभंगथाध्यायदासुदयवदुहुडी। नरवयधधनवववववकारुय
 दंविर्नु। यथाकद्रगकुदुयनसितना। तेजावधी। ध्यायलंकवदीधवययम
 ससमवकुरुभयीतंयम्यकवधुर्लंकमलायगलाचतु। नववगवसंकागमेनि
 नरुसमप्रदिनु। तासदवसमासस्येहुजासुनवलांकमे। उवविष्टासुथेवभव
 कनधुम्युजयुवासुसकसुटिकयखांनीयुयमधिपूयव॥ उं उवविष्टा॥ **सि**
नित्यादिमुनि॥ उं सत्यायवासूदवायनम॥ नकषे॥ यव। ययमायानिब्रह्म
 यदुलंरुगवभनम॥ ॥ **लयादिकलभयुजनी॥** उं लभ्यनम॥ उं विष्ट॥
 शाडवधुय॥ उं वचधुय॥ उं जयाय॥ उं विजयाय॥ ध्यात॥ उं वरुला
 साविनालाकीमधाकामासुथोवनी॥ हसवधुसुसंस्तानावीनान्नतयथाधवा
 । चानसदीक्षसंयूक्षसदीक्षवधसमुिता। सदायाम्यकनाधुजावाभयीरुल

२६

कान्तिता। बालवज्जनधविष्मकार्यतत्याग्नेयाक्रियो। गजोर्हगवकरुसोस्त्राययने
 यवाग्नेगशाडवीश्वर॥ वलिनवयादि॥ उं फा॥ उं लक्ष्मीधनथावधुयवधुवज्यागध
 । विजयात्रमहादवीनमस्तु। नभानम॥ ॥ **यूयस्यदक्रि। गनुठकलगावनी॥** उं
 उं वं वं नयायनम॥ ध्यान॥ उं वकुरुधुमहायादीलीसंयुक्कटिलोचमं। इववामी
 कवाकार्ययकमधुलमधुर्न॥ ससमवधुवुठविषयुधवकुंयुधुदवी। नवदूवाकुरु
 धमसंयागीचकुजगनन॥ ससमवदं कर्णकर्मदीयना। रयानक। स्वमुदालंक
 गासर्वदिनुजाधुवकुधुला॥ ध्यातया॥ यवयाकना॥ स्वयरा। रिवित्राजिगाध
 तस्मांकुनमकुर्वाध्यानमूर्कमयामून॥ उं सये। धुसिगवृत्तां॥ मुनि॥ उं वेदगयाम
 हात्मासोकाध्यात्मजयकिवाट। विष्णुवारुयसिद्धासीनमस्तुधुयकि॥ ॥
 नभामरुजयकलभमव्य॥ उं मलीजयाय॥ ध्यान॥ उं वषरुसंकिर्नदवंहिस
 कन्दसन्निह। नकवकुंननगवचकुहुजमहध्वनं। विष्णुलाकधनदववनाकल
 नधविटी। वामाप्रसमितादवीदिनुजाकलभवन॥ हमारुनवराहपात्री। नगाम्

उविहृषिता न वाम नीलवर्धाय त्सर्वेयाय यथागर्त ॥ उं शम्भु कं यज ॥ नेवद्यादि का
॥ उं अमृती गमह ॥ यविष्मन्ति धर्मनाय वा यजाय वस्त्र पायन मस्तु यलोचन
॥ ॥ उं आदित्य कल ॥ उं नी ॥ उं आदित्याय २ ॥ ध्यान ॥ उं कय यम समासीन सफा श्वथ
वाहन ॥ उं कय वरुण जा भू ॥ दा ॥ उं मो कसु सुयु ॥ उं कास्य सुमुख ॥ उं वसना लाङ्क कनक
य ॥ उं वसिष्ठ नरान् सर्व पाय यनागर्त ॥ उं आ कय ॥ नेवद्यादि मुनि ॥ उं सरु सां शु महा
भर्तृ मणिकुल मणि ॥ कय या कि ॥ समीयां शी श्व कव र्व वन विग्रह ॥ सनाल पय वाजी २२
व विग्रह तर्क धक र्व क मा ॥ ॥ उं आदित्याय २ ॥ ॥ तमाना गवाज पूजन ॥ उं पुं वन
॥ य २ ॥ ध्यान ॥ ना गया ध ध र्व दूर वला यय नि विग्रह ॥ गण ॥ उं ध व र्व धाय द व र्व म
क वासन ॥ अ नु का वासु की र्व व न क क कटि क कथा ॥ यम महाय म ॥ उं व र्व र्व याल
कुलिक कथा ॥ उं व र्व र्व यार्क ॥ ॥ क ॥ ॥ ना गया ध ध र्व क नि र्व जल वाज महावर्त ॥ नि
मो ग ॥ उं व विग्रह नाग वाजन मा मु ॥ ॥ य कय क पी पूजन ॥ उं पुं य का य २ ॥
ध्यान ॥ महावर्ष व ॥ उं द धाय क वाजी महा द्वि क थ य क का टी य वी वा र्व य क र्व स धन

संयुत धामहावे रुत संयन्ता रु व या दा र्व न व त ॥ उं अ नु ज क ॥ उं पुं य क ॥ २ ॥ ध्यान ॥
य क पी य क क ना रि ॥ य विग्रह विग्रह ॥ महा रा ध व र्व य का य क द वी य सिद्धि ॥ उं य ॥ य
क ॥ ॥ क ॥ ॥ य क य व य म ना मी य क पी स र्व संयुत ॥ स र्व विरु व र्व क था न म क य क य क पी ॥ ॥
गत ॥ ल श्री पूजन ॥ उं य ॥ शिथ २ ॥ ध्यान ॥ य म य विग्रह देवी नीला तल दल पु ॥ सि
द्र व य म र्व सा व ॥ कानि सा र्व न सं कि ना ॥ उं यी श्व ॥ उं दौ ल ॥ २ ॥ ध्यान ॥ य म स न कि ना
द वी पु र्व र्व टि क स नि रा ॥ अ उ द यो ग र्व सा र्व धन धा त्वा व य दा ॥ उं या व का न ॥ ॥ क ॥ ॥
ल ने व द्यादि ॥ उं यी ल श्री द व द वी र्व स र्व सं य रि दायिनी ॥ स र्व का म य दा द वी न म सा र्वानि
मान म ॥ ॥ उं या दि क ल ॥ उं नी ॥ उं स र्व र्व ४ क ल ॥ ग ॥ २ ॥ उं अ ॥ जिथ ॥ ॥ ग म य
लि ना र्व नी ॥ उं स दा नि वा य न म ॥ अ वा रु ना दि ध्यान ॥ उं रा व य ॥ क म र्व लि र्व नि र्व स
व र्व र्व यि न ॥ व क्रा पु या यि र्व द र्व मा म य रु व न र्व ॥ उं स द्या जा ना ॥ ॥ क ॥ ॥ हि म क
पु नि र्व द र्व र्व ग ॥ द र्व र्व धा वि ॥ स र्व पा य र्व र्व र्व व र्व र्व य र्व म नि र्व ॥ ॥ ग ॥ ॥
रु वि र्व ला र्व नी ॥ ना स ॥ ॥ ग त ॥ नि व र्व कि क ल ॥ उं नी ॥ ना स ॥ उं अ

30

[illegible]

32

[illegible]

37

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५

[illegible][illegible]

42

[illegible]

[illegible]

द्वेदिमूलावायाननयव्यंदापथ॥
 नातिफलधीरुत्तानयेनपथ॥
 नगिलदहोसविभोनहिनीयादनस्यकृत्यविबिधः॥

नमोऽयं रुद्रिण्यात्तस्मान्नादिनिश्चयम् ॥ १ ॥ रुद्राद्यानां यजमानं न ॥ २ ॥ अथा
सूर्यादि ॥ युवराजं न ॥ मूलान्वायं दयः पादेषु काला ॥ वलिद्वयं दत्त्वा सर्वेषु
नक्षत्रेषु ॥ पूर्वोत्तरदिशि वा सांख्ययोगान्दिग्धान् कल्पनां न ॥ ३ ॥ सिंहासनाद्यविशि
ष्टां न ॥ नासादिद्यावदायाम् ॥ ऊर्ध्वं पादौ द्युजात्मानं न ॥ कल्पनां न ॥ नक्षत्रं न ॥
वैश्यानां रुद्रिण्यात् ॥ यजमानं यजमानोपि न ॥ धनं तूत्तमं न ॥ ४ ॥
यथा कर्म समर्थं दत्तं किं यां मानं ॥ ५ ॥ रुद्राद्यानां यजमानं न ॥ यजमाना
वसमीदं न ॥ ६ ॥ अथानिकल्पनायत्ता ॥ ७ ॥ रुद्राद्यानां निवसि ॥ ८ ॥
विष्णुनाय ॥ ९ ॥ रुद्राद्यानां यजमानं न ॥ १० ॥ रुद्राद्यानां यजमानं न ॥ ११ ॥

ॐ वृत्तनदीका ॥ ॐ विष्णुवन्दना ॥ ॐ समावर्तनाम ०० ॥ ॐ आ कृष्ण ॥ ॐ निसा साव
 र्त्तन ॥ ॐ विवाहाय ०० ॥ ॐ दवानायित्री विह ॥ ॐ निसा साव ॥ ॐ मधुयक्त ॥ ॐ य
 मधुना ॥ ॐ नाना ॥ ॐ कृष्ण किल जस नो ॥ ॐ जशवावाह ॥ ॐ जशदि ॥ ॐ नाना य
 धायल कन्दवी कृष्ण सितस्वगीश्व कर्णा दुल्लस्यदद ॥ ॐ कादा ॥ ॐ यीतव कु
 दान ॥ ॐ वृत्ता ॥ ॐ यवि ॥ ॐ गतयुदका रु विनत सा गनावन काय ॥ ॐ यमन सा रु नि
 नकाय ॥ ॐ गता नमिद ॥ ॐ हि नक्षत्र ॥ ॐ गतयुद कानकरिवायके ॥ ॐ सहसा वि
 सह ॥ ॐ सासय ॥ ॐ जशारु सक ॥ ॐ नीतिन काय ॥ ॐ नमः ॥ ॐ रुवाय ॥ ॐ सो नम
 य ॥ ॐ नव वीय ॥ ॐ नाना वन्दन ॥ ॐ यजयत ॥ ॐ जा कृति ॥ ॐ विष्णु वन्द ॥
 ॐ ॥ ॐ जश्वेत्ती ॥ ॐ वन्दन काय ॥ ॐ विवाहा ॥ ॐ कृष्ण रु विवा ॥ ॐ
 ॐ ॥ ॐ या रु तिनी ॥ ॐ नाना ॥ ॐ जश ॥ ॐ सयुधाणी वीद ॥ ॐ मातायि रु विस रु ना
 य ०० ॥ ॐ मा भ वय ॥ ॐ वयु ०० ॥ ॐ नाना य ॥ ॐ नमः कयजा ॥ ॐ यनिहा

४५

ये स्वाहा ॥ ॐ मना कृति ॥ ॐ मन्त्र कृति ॥ ॐ ध्यायामी ॥ ॐ विष्णु कृष्ण वन्दन सा गारु सा
 वादसी जय ॥ ॐ जयमाना ॥ ॐ विदु विमडि मरु नय वा यजनाय दग्नि मयज कयनी
 रुति दवद म क्रिया ॥ ॥ गतयुद का रु विवा ॥ ॐ कृष्ण रु विवा ॥ ॐ
 कृष्ण मः दी कय रु रु ॥ ॐ कृष्ण मः ॥ ॐ कृष्ण मः रु दयाय जगु ह्यो यन मः ॥
 ॐ कृष्ण मः शिव स गुरु नीन मः ॥ ॐ कृष्ण मः शिखाय मध्या माथे नमः ॥ ॐ कृष्ण मः कववा
 य जनामिकाय नमः ॥ ॐ कृष्ण मः नगार्या कनिष्ठा यन मः ॥ ॐ कृष्ण मः ॥ ॐ कृष्ण मः
 कृष्ण ययुष्व वकाय नमः ॥ ॐ कृष्ण मः नृ सिहा यद क्रिया वकाय नमः ॥ ॐ कृष्ण मः कयि साय
 यधिम वकाय नमः ॥ ॐ कृष्ण मः ववाहाय ड कव वकाय नमः ॥ ॐ कृष्ण मः यै वी वन या
 यन मः ॥ ॐ ॥ ॐ जगन्नाथ ॥ ॐ कृष्ण मः रु दयाय नमः ॥ ॐ कृष्ण मः शिव स ०० ॥
 ॐ कृष्ण मः शिखाय वषट् ॥ ॐ कृष्ण मः कववाय रु ॥ ॐ कृष्ण मः नगार्या वी वट् ॥ ॐ
 कृष्ण मः दी कय रु रु ॥ ॐ नाना ययुष्व वकाय ॥ ॐ नाना ययुष्व ॥ ॐ नाना ययुष्व ॥

॥ अलिकानधः पाण्डवः कर्मधर्मगण्ड्या न्यासि ननु याध्यतथ वक्तुं ॥ अथ यादृदि
 चान्तिः ॥ आधमः कर्म लुकाः यध्यः ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥
 सद्वाङ्मयनः कर्म लुकाः यध्यः ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥
 लमर्कः ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥
 आरुह्य नमः सर्वदहिदहिमलयसायनं ॥ ततोदिवः ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥
 नमः ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥
 विनालिननमः ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥
 सः नात्रायधयसि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥
 यमया रुवस्वाहा ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥
 हा ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥

नायलभयविष्णुत्मनः अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥
 अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥
 हनः स्वाहा ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥
 धर्मा ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥
 मूलवीजसमन्वितं ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥
 मनुदवाचनं ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥
 अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥
 सिकासनयाचकं ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥
 स्नानचन्दनादियुजनं ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥
 ह्यमासननमः ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥ अथ यादृदि ॥

[illegible][illegible]

तनन्मन्त्रिकविद्विन्विविन्नवर्गिहाममाचन७॥ ॥ बहुः समनकांगिराजनयन्म
 लुलविलिख्यगज्जन्मलुलमजमाननधत्वातगुचन्मलुलेमूलायाथानध
 जायागय७॥ ॥ नानामङ्गलियञ्चगद्वादिककाय७॥ ध्रुवागययवयिक
 वायासादवैद्यन॥ ॥ गतायजमाननधजाधत्वादवसमयर्ल॥ वाञ्छ॥ उञ्ज
 अञ्जगवानारुकल्य॥ अञ्जदि॥ उञ्जगवन्दवदवगणिलोञ्जगचहुकुञ्ज॥ य
 अञ्जद्वाध्रुजयया७ययतामिधसूदन॥ स्वममरुध्रुजन्दयात्कत्वावायञ्ज
 निर्क॥ किंकिनीनवसंघन्नामुयुनचुगुरुमिर्ग॥ एतन्निवविधमननसर्वदे
 वायविस्मिर्ग॥ सर्वत्तनसरुमेकीभादनदिविविस्मव७॥ ध्रुजमालाकूलदि
 वयिथयासादमानन॥ यथाध्रुजाष्टकवाचिदित्तिदिद्वनिवगय७॥ सवि
 मानसरुमलदिशध्रुजसूत्तरुन॥ कल्यायुतसरुमायभादनदिविविस्मव॥

यृष्टिनिवचयार्तं दुष्टं कृपयि मकं गक। अलो न कं दनि दायया मने सत्यक
 कृकं। आयु ४ कामं प्रियं पुष्टं यानि च वधन पुष्टं। नाज युक्तं तथ वार्थं न क व लुष्टं
 उष्टव। कवे ल्यां क विध्वं यस्मा लक्ष्म गं विना गनं॥ सर्व काम विविर्ग
 धजा दान मरु लं। यदा दिव मरु तं नृनां घनि र्मर्या उयावती। ताव द्द्वय मरु
 मालि विरु लं कि महीयत॥ इति धजा दान वार्थं॥ दक्षिण॥ आयस गं॥ यथ
 दवस्य वि लेखनं॥ ॥ त ४ मर्या इति॥ दक्षिण॥ दक्षिणं॥ दक्षिणं॥ दक्षिणं॥
 तिक कोष्टिकं॥ यव धन्या दि॥ यृष्टि वद्वि धिना नालि कलं इ इया॥ वासु
 पूजा॥ अन्न स कल्प॥ यृष्टि दायवृत्तिका दामं॥ उष्टव वार्थं १०७॥ वलि रु
 नं॥ दक्षिण दानं॥ वाचनं कल गं पुनि धाय॥ तता दिन पुष्टं॥ आयस मा
 य १०७॥ वाचनं कल नय उमाना रिषकं॥ वन्दन अणी वदि दद ७॥ घृन

॥ नदिद्वानकलणमर्चनं ॥ सिंहासनाय प्रिक्लिता गुणव्यासादियुक्त्याम ॥
 अर्चयाम्युक्त्यामर्चनं ॥ कलणमर्चनं कर्मणामर्चनं ॥ मूलध्वजादि
 युक्त्यामर्चनं ॥ दवस्मानादि आर्चनं ॥ ॥ नतः संस्था आर्चनं ॥ दग
 पाटि ॥ दगवर्ति ॥ गानिक कौटिक ॥ यवधन्यादि ॥ पूर्ववद्विधिनानालिक
 लंशुद्रया ॥ वाक्मर्चयुक्त्या ॥ अन्नसंकल्प ॥ यूनदीयवृत्तिकारुम ॥ उन्नय
 वार्चय ॥ ॥ वलिहर्नर्चयद्विधेयान् ॥ वाचनकलणप्रतिभय ॥ नगादि ॥ ५२
 नयुक्त्या ॥ आसक्ति ॥ वाचनजलेन यजमाना लिख्य ॥ चन्दनज्वालीवृत्ति
 ॥ दद ॥ यूनन्नासादिसंस्था आर्चनं ॥ यजमानेन चतुर्विधमूलावाधाने
 पूर्यदाय ॥ वाक्मर्च ॥ ४ स्वस्ति वाचनं य ॥ १० य ॥ वीहियवृत्तिनालिक
 लणीरुलायुक्त्या ॥ वलीकमात्राणि आगमोक्तविधिनावर्तिदाय ॥

॥ ललितकृतमविधनं यस्मिन् दिने विधनं ॥ ॥ नताडयनदहनिया ॥ ४
 स्नानादि निवृत्तकर्म ॥ अक्षद्वानाप्रयजमानेन ॥ उन्नयदिसूक्त्या ॥ यूनन्नाज
 न ॥ चतुर्विधमूलावाधानादय ॥ दय ॥ दय ॥ काला ॥ वलिहर्नर्चयद्विधेयान् ॥ यजमानेन चतुर्विधमूलावाधाने
 पूर्ववत्प्रकारेण साक्षात् ॥ नदिद्वानकलणमर्चनं ॥ ॥ सिंहासनाय प्रिक्लिता गुणव्यासादियुक्त्याम
 वा ॥ व्यासादियुक्त्यामर्चनं ॥ अर्चयाम्युक्त्यामर्चनं ॥ कलणमर्चनं कर्मणामर्चनं ॥ मूलध्वजादि
 युक्त्यामर्चनं ॥ दवस्मानादि आर्चनं ॥ ॥ नतः संस्था आर्चनं ॥ दगपाटि
 दगवर्ति ॥ गानिक कौटिक ॥ यवधन्यादि ॥ पूर्ववद्विधिनानालिकलंशुद्रया ॥ वाक्मर्चयुक्त्या ॥ अन्नसंकल्प
 यूनदीयवृत्तिकारुम ॥ उन्नयवार्चय ॥ ॥ वलिहर्नर्चयद्विधेयान् ॥ वाचनकलणप्रतिभय ॥ नगादि
 नयुक्त्या ॥ आसक्ति ॥ वाचनजलेन यजमाना लिख्य ॥ चन्दनज्वालीवृत्ति ॥ दद ॥ यूनन्नासादिसंस्था

॥ देवाद्यैर्न तथेवाहुर्नि ॥ कृतं संस्थाहुर्नि ॥ दण्डायाहि ॥ दण्डवर्ति ॥ गतिकयो
हिक ॥ यवधन्यादि ॥ पूर्ववद्विधिनाना लिकर्तुं श्रुया ॥ वाक्कलपूजा ॥ अन्न
संकल्प ॥ द्यूतदीपवृत्तिकारुम ॥ उच्चैर्वाच्येय ॥ वलिरुनर्णददिकि धान
॥ वाचनं कलं गणनिधाय ॥ कतादिनयू ॥ आसंसाय ॥ वाचनं जलनयज
माना रिषक ॥ चन्दनश्रीवादिदद ॥ पुनन्नासादिसंस्थाहुर्नि ॥ यजमान
नचउर्वेदिमूलायाशानियुष्यदायय ॥ वाक्कल ॥ स्वस्तिवाचनं य ॥ य ॥ न
शोकमात्रायादि आगमोक्त विधिनावर्तिदायय ॥ कलिलकंठामविधननव
मदिनस्यविधनं ॥ ॥ कताद्यय ॥ रुनियान्तस्त्रानादिनित्यकर्मक
वा ॥ अक्षाद्वाना ॥ यजमानन ॥ अयादिसुयादि ॥ युष्यराजन ॥ चउ
र्वेदिमूलायाशानियय ॥ यादयका ॥ वलिरुनर्णददत्वायकर्ममल्लयवि ॥ ॥

पूर्ववत्यकाजलसंगमयागमदिद्वानकलगावर्न ॥ सिंहासनायनिष्ठित्वागुनू
न्यासादिप्राप्तयाम ॥ अद्ययागपूजात्मान ॥ कलगावर्नकर्मलाश्रुति ॥ म
लधंजादियुतिष्ठाकर्मलाश्रुति ॥ देवाद्यैर्न तथेवाहुर्नि ॥ कृतं संस्थाहुर्नि ॥ द
ण्डायाहि ॥ दण्डवर्ति ॥ गतिकयोहिक ॥ यवधन्यादि ॥ पूर्ववद्विधिनाना लिक
र्तुं श्रुया ॥ वाक्कलपूजा ॥ अन्नसंकल्प ॥ द्यूतदीपवृत्तिकारुम ॥ उच्चैर्वा
च्येय ॥ वलिरुनर्णददिकि धान ॥ कतादिनयू ॥ आसंसाय ॥ वाच
नजलनयजमाना रिषक ॥ चन्दनश्रीवादिदद ॥ पुनन्नासादिसंस्था
हुर्नि ॥ यजमाननचउर्वेदिमूलायाशानियुष्यदायय ॥ वाक्कल ॥ स्वस्ति
वाच्येय ॥ य ॥ नशोकमात्रायादि आगमोक्त विधिनावर्तिदद्या ॥ कलिल
कंठामविधनदण्डमदिनस्यविधि ॥ ॥ कताद्यय ॥ रुनियान्तस्त्रानादि

73

यदसलुननाउलकी॥ वझाविमृशगककलनयमवलदक॥ यागीम
मी॥ ४॥ यदिकं गीनदु गनगुगलवमरु॥ मयुगा॥ सर्व नाग॥ ४॥ ४॥ नन्वा
४॥ सिद्धवीनादत्रिकरुय रुजाश्रुदृष्ट्या दिदवाया निन्वायास्यमाना॥ ४॥ सुन
वजनमिगा॥ पानुव॥ सर्वदवा॥ ४॥ ४॥ कानवृक्षमूलकमपदकपिर्नकु
न्दविस्तीर्णु गीरवाअग्यगुसामयुषयिइअखिलंगमधुधर्ववरुर्न। याग
श्रुयासुलीर्नउमअकअयदेनीयनयस्यनिर्हयागसेकल्पगुदगुवि
गलमनिरु॥ याहुवावदवृक्ष॥ ४॥ ४॥ सुम्माङ्गुर्माणागुगुजगुलावाल
यन्दाहुदुहोलाहजामासनाससरुदरुदरुदरुदरुमानेरुदानी। दकाना
खाशमानाचकटकटकटसंकटाटापदहिनिष्काकाहास्यमानासकरुकरु
करायाहुयुषान्निह॥ ४॥ कृतार्थनानमिहयुकटिनमसुखनेकनेगधि

नाथीतडाहिः ४ यद्वलनं द्रवहसदं दिनिनादुस्वनन्दः ४ निद्रियकुगार्गम
 थजगगदिनदानयेन हि वल्यभार्यघोउखयवैपतिवुवनमहा सिहनुय
 लविमः ४ ॥ यी ४ यस्याधत्रिणा जलधनकलुगं लिङ्गमाकागनूयनद
 ग्पूषामालाग्रहमलकसुर्मनगुचन्द्राकवद्विः ४ कृदोसफसमूदाहु
 जनित्रिलिखनः ४ सफपोतलयादीवदथ्रवाविवाचंदगदिगवदन
 याहुवादिशालिङ्गः ॥ कालवधनुदवाः ४ कितिचुधित्रसदागस्यसिधु १४
 रुतावदकाः ४ सनुविद्याः सकलनृयतिजाधरुवेविषजाथ्र। सत्वाना
 पालनचयुरुवरुसुहताकावागममाथयुका निष्पात्ताह्यमादनिव
 सहुसतर्गसयजायुधगका ॥ ॥ ममयलि ॥ ॥ यत्रोस्यस्येनवर्षद्वषरु
 तनुगर्गदकि (६) नीलेवर्षुवामनकं विनगु कनकसमकनयश्रिमतु

द्दुक्ता ॥ जेगुलं पागमपुंवरुयकजवनं गकियदीजुजायसिचुन्दगी
 लिखागुलिबयनमक नं नोमिखदादुहसं ॥ ॥ कादिपुवत्वमवत्वमसि
 चयनमयप्रिमकोनमूर्ति ॥ ॥ रावंधाटमानं तलतुलवितलादकि (६)
 तावमूर्ति ॥ ॥ कीट्यातुनाखिसकलपुरुमयकोनरावअउद्वद्व
 सखंवाद्धनार्थखनतनवितनमकुनाजंनमासि ॥ कलल ॥ ॥ यत्रोस्य
 ममदृषा ॥ ॥ मिति ॥ ॥ ॥ आदियमलुल ॥ ॥ शुक्लागुमाली ॥ ॥ मय ॥
 यमलुल ॥ ॥ उत्तं गायस्यलक्ष्मीः ॥ ॥ लिलितधवनागं स्वयमादिरुका
 दाशविकुमनायं ॥ ॥ वतित्रसतर्गहानविरुनय ॥ ॥ सूर्याग्नेमाम
 मध्वनिवसमिसतर्गसाधकानकिपात्तासव ॥ ॥ सोधेन्दुवकादधमिच
 युगललक्ष्मियुकासगी ॥ ॥ ॥ कममलुल ॥ ॥ मध्वद्रुचकमध्वसिग

۱۵

हात्मानं विप्रजो ब्रह्म कर्णं । उक्तादि देवता सर्वं नमामि सगर्गं वरुणं ॥ ॥ स
य ॥ निव ॥ नाना य ॥ ॥ देवता ॥ विश्वकर्मा ॥ गुरुदेवता ॥ यासाय
आसनम् ॥ ॥ यद्वाणीयद्वा नागन्द ॥ ॥ तं जा र्वा र्वा नि विश्वं रुवकं न
बहुर्नयावकं रूढुवस्वः सवयि श्याय विश्वं मुनिजननमिर्गं राखेनं गकि
हस्तं । उक्तादि देवता सर्वं नमामि सगर्गं वरुणं ॥ ॥ स न ॥ स नु निव नु न
सुकृतिना विष्णुसुखाय दया ना जानः यत्रियालयनु वसुधा धम्मसिना
॥ सर्वदा । कालमेकतिव विना उलमुचः स नु य जाय ध्यामादा नं
धनवृद्धिवा न्धवसुह (जा र्वा यमादा ॥ सदा ॥ ॥ दिष्टवर्षकुम्भया उलम
यिच नृणां सलुनलादिनाथा ना जानः यालयनु पतिदिनवसुधा वा

२०
 १५
 १०
 ५
 २
 १३

मन्त्राद्याः समस्तौ दवक न्यहाया रुजग निगिचत्राः सन्तु मयी तमानास
 द्वा। मा। न्म धेनायः सन्तु सन्तु न सन्तु लीकृ दम्भाः सन्तु रुदं ॥ ॥ दवा सन्तु
 ल्य कृ म्म सन्तु वेदा ग्धत्वा न वच। अयू वद्विः यय त्रे न यजमान सन्तु
 सन्तु ॥ ॥ मवः दीनं पुदा सन्तु विद्याः स्वायं न सन्तु गिगाः। पांदा नो वि
 लाया च सत्याया यधि वीर थ। यदि द्या मा सन्तु यरू सन्तु आचा य सन्तु वि
 वरु ॥ मन्तु मूदा विहीन मन्तु मन्तु य ० नदा वरु ॥ मागा केना दिहीन त्वा
 वन्तु विव विण वरु ॥ पु विणी ला दिरु ॥ न यज य ० न क म्म सन्तु ॥ व
 दन्तु मन्तु पुद्व न क्रिया हीन न दहिना। दन्तु मन्तु सित त्सर्व कृ वन्तु
 लिव मन्तु ल ॥ ॥ जिद्वा द्या मन्तु वन चलना कृ म्म सन्तु विन्दु याता लीखा
 पुद्व लिखन यतिर्त लूक यज दन्तु मन्तु। मागा हीन यदिकृ यतिर्त व

थ्यमान विन सन्तु मन्तु सर्वत दयिच मया सन्तु। मन्तु ० द्म मन्तु ॥ अन्तु
 ना ० नाना वायि यन्तु यामा हिर्त कर्त। दन्तु मन्तु सिद्ध वन्तु
 मायु मन्तु तयिरु ॥ ॥ पु मन्तु सन्तु जगतां यन्तु कन्तु ल्म सन्तु
 मन्तु ॥ द्या मन्तु ययानु मन्तु सन्तु सन्तु रूखी रुवन्तु लाका ॥ ॥ ल्व म
 निः सन्तु रुतानां सन्तु त्वन्तु च नो च न। अन्तु मन्तु अन्तु रुतानां दिद्वा
 ल्व यन्तु यन्तु ॥ कर्म मन्तु मनसा वा वा ल्व काना न्या गनिर्म मन्तु। मन्तु
 न क्रिया हीन रुकि हीन यन्तु मन्तु ॥ जय हा मा च नो हीन कर्तानि
 ल्व मया तव। अन्तु वान्तु हीन सन्तु ल्व यन्तु रुतानां ॥ ॥ अन्तु मन्तु
 वन्तु थ ल्व मया कर्म निवर्तानां विनाधिक मिर्द कर्म कर्म मन्तु यन्तु
 ना कन्तु ॥ यजमान स्यादिना वा यन्तु यासादा यन्तु सव ल्व कल ल्व

धजावत्राह नलकाद्रुतियरू सयुलुनिमित्यथञ्जगन्धयुष्यधृय
 दीयञ्जनेविधेः सर्वविधियविधुलुमन्तु ॥ कनेऽलिनामो
 मलुलोनिनसानमत्कारन ॥ मलुलसुयुष्यनिनसिरुवर्ण ॥ ल
 यायादीविमर्जन ॥ आचमन ॥ ५ ॥ देवस्तुलितकलगाञ्ज
 न्मायायालीचोद ॥ उँ०००दविष्णुः ॥ उँ० विष्णुनेत्राट ॥ उँ० आडि
 यु कलगाँ ॥ उँ० आनित्रिषि ॥ उँ० यस्यकूर्मा ॥ वक्रादि विमर्जन ॥
 उँ० उलिष्टवक्रादीस्यनदवयवत्वमरु ॥ उयययनुमन्तुनः ॥ सूना
 नव००००यामरुकोवासचा ॥ ॥ यलीनविमर्जन ॥ उँ००००दविष्णु
 ॥ वक्राकृणमाचन ॥ उँ० कल्पाविमर्जति सत्वाविमर्जति तस्मैती
 विमर्जति ॥ वायायनदसारागमसि ॥ वक्राकृणनयलीनादक

नाहिवर्क। उं सुमिरियान ॥ वसु ८४ संकृ नृद्वयसमिधं हाम ॥ उं कृतायकर्म
 (८४) स्वाहा ॥ उं अकृतायकर्म (८४) स्वाहा ॥ उं उता नृद्वयसं स्वाहा ॥ उं तनूपा
 ५ (८५) नसितनू मयो हि आमुदजि (८५) नसि आयु मयि हि वञ्चिदि अ (८५) नसि व
 च्चमिदि हि अ (८५) न उ न त न्वा उ न त न्म आ य ए म धी म ध व स वि ता अ
 द धा दु म धी द वी स न स्व ती आ द धा दु म धी स ग्धि ना द वा वा ध र्ता यि स्व जे
 म उा वि ह्यं ग न नि व म आ या य तां वा क्वा ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
 ग्रायु र्धं उ म द (८५) क ल्पे य ग्ध ग्रायु र्धं । यद्वं वृ ग्रायु र्धं त न्ना अमु ग्रा
 यु र्धं ॥ १०१ ग सु रु ग्म ना ल ला ट् गी वा या द दि ए वा ड् मू ले द्वा दि ति ल
 कं का न य ७ ॥ क ल ग्म दि वि स र्जु न ॥ उ उ द्व यं त म स ॥ ॥ य म क ल ग्म
 य मा नि क वा ग्म ग्म न वा स म य ए का न य ७ ॥ ना ग य द्वा दि स्व स्व सु न

नय ७ ॥ यद्गुमिहासनाकप्रखमिकयजमाननिमिचुन ॥ उं प्रकाहनं
 ॥ वलि ८ ॥ उं अक्षयवचद ॥ उं द वस्यत्वा ॥ अययपादकनायद्वर्ण ॥
 अग्निताहवका ॥ तगावर्णदायय ७ ॥ उं वसोयविगुमसि ॥ ॥ तगाहविष
 क ॥ उं अक्षयकसुमदूतमसु ॥ अयतासुतालुदुयर्णनिधाय ॥ नि
 वगकि केल ७ ॥ न अक्षयक ॥ उं द वस्यत्वासेवि ॥ उं यालागमकवर्ण ७ ७
 ॥ उं अग्निनो कं व ७ ॥ उं अययहिष्ठा मया ॥ उं अ ८ ॥ नि ॥ ॥ ॥ अक्षय
 क ॥ ॥ चन्दनदद ७ ॥ उं यददक ७ ॥ ॥ सिद्धन ॥ उं ल ७ ॥ विदुदा
 ॥ कममलुलकसारुनीदद ७ ॥ उं समिद्धा अ ७ ॥ ॥ य ७ ॥ सुग
 मारुलययतामूलदद ७ ॥ या ८ ॥ रुतिनी ॥ मगु ७ ॥ उं द धि काया
 ॥ अदने ॥ उं दीयायै स्वायवना ॥ अग्निवा दद ७ ॥ उं ध्रुवावा सि ॥

लिङ्गमूढ ॥ उं अग्निनलकू ॥ उं दीयायै स्वा ॥ उं ७ ॥ द ७ ॥ वि ८ ॥ सर्वथा
 ॥ ॥ द ७ ॥ वलोकन ॥ उं द ७ ॥ चन्दनिरं यसादयर्ण ७ ॥ रु दयहि
 ॥ अत्ताविम्वध्वययसम्बदायजयायव ॥ ॥ मलुलनमसाव ॥
 मलुलविम्वर्ण ॥ उं यालुदवग ७ ॥ स ७ ॥ य ७ ॥ जामादायज ७ ॥ का ७
 ॥ ७ ॥ कामयदागाययुननागमनायव ॥ उं ७ ॥ द ७ ॥ वि ८ ॥ मलुलन
 दाहिषक ॥ उं यदान ॥ ॥ मलुलकूदनकय्यटा ७ ॥ दिनानाना
 व ७ ॥ कय्यटनगावर्ण ॥ अग्निनकादिनात्र ॥ ॥ उं न ७ ॥ सि ॥ अ
 ना ॥ उं य ८ ॥ रुतिनी ॥ रुलयय ७ ॥ उं मनाद ७ ॥ ति ॥ लाजा
 मूहिकयायनि ७ ॥ त ८ ॥ सर्वकलगासमयय ७ ॥ ॥ ७ ॥ लिलकल
 नदवर्ण ॥ अग्नि कलगा अग्निर्ण ॥ उं द ७ ॥ दि कलगा वदियान ॥ उं

nr

५

二

60

पुष्पराजं ॥ निवर्गं किं कलं स्नानकलं गलं यतिं कृष्णालदन्तं
 गमोक्तं कासगुणं वृद्धिं द्वित्रिंशदिष्टं ॥ ततोऽग्निं कायं कोनये ॥
 पूजनं कुर्महे सर्वं स्यात्पूजादिति ॥ तथेव तिलादिति ॥ अग्निनामलि
 स्त्री ॥ ॥ ततोऽथ कुर्महे समं ॥ ॐ न्दादिलोकपाले १० ॥ गेहं गुण्य
 निवीक्ष्य च शुद्धिं ॥ ॐ न्दादिलोकपाले १० ॥ च शुद्धिं ॥ अ
 ग्निकृत् ॥ नन्दादि ॥ कुर्महे ल ॥ स्वस्वमन्त्रं ॥ ॐ न्दादिलोकपाले १० ॥
 यश्च मन्त्रादि स्नानकलं न ध्वनं ॥ पूजनं ॥ यथा च कुर्महे ॥ अ
 ग्निं ॥ १०८ ॥ ॐ न्दादिलोकपाले १० ॥ ॐ न्दादिलोकपाले १० ॥
 यथा च कुर्महे ॥ ॥ यथा च कुर्महे ॥ ॥ यथा च कुर्महे ॥ ॥ यथा च कुर्महे ॥
 पूजनं ॥ ॥ यथा च कुर्महे ॥ ॥ यथा च कुर्महे ॥ ॥ यथा च कुर्महे ॥

七

五

यथाकार्यं ॥ दध्नस्तानादिपूजनं ॥ आहुतिं ॥ ॥ कृष्णानिर्वाणं ॥ ना
 नायकस्य मूलवत्तु न्यास ॥ एतन्नाम न अति कर्तुं न्यास ॥ यथा म
 नादिस्तानं ॥ अति कर्तुं न्यास ॥ एतन्नाम न अति कर्तुं न्यास ॥ यथा म
 सिद्धिं न्यास ॥ आहुतिं ॥ अग्नौ न्यास ॥ ॥ अथायं यजमान रुक्म
 नाति कर्तुं न्यास ॥ ॥ उक्तं यथा ॥ उक्तं यथा ॥ उक्तं यथा ॥ उक्तं यथा ॥
 रुक्म ॥ ॥ मन्त्रानामुक्तं यथा ॥ ॥ मन्त्रानामुक्तं यथा ॥ ॥ मन्त्रानामुक्तं यथा ॥ ॥
 रुक्म ॥ ॥ मन्त्रानामुक्तं यथा ॥ ॥ मन्त्रानामुक्तं यथा ॥ ॥ मन्त्रानामुक्तं यथा ॥ ॥
 रुक्म ॥ ॥ मन्त्रानामुक्तं यथा ॥ ॥ मन्त्रानामुक्तं यथा ॥ ॥ मन्त्रानामुक्तं यथा ॥ ॥
 रुक्म ॥ ॥ मन्त्रानामुक्तं यथा ॥ ॥ मन्त्रानामुक्तं यथा ॥ ॥ मन्त्रानामुक्तं यथा ॥ ॥

चन्दनरुलमननयुक्तं ॥ न्यासा ॥ उंकीस ॥ वांरुदयायनमः ॥ उंकीस
 ॥ वांलिजमसुखारु ॥ उंकीस ॥ वांलिखयिवघट ॥ उंकीस ॥ वांकववा
 यदू ॥ उंकीस ॥ वांनगुगयाय ॥ वांघट ॥ उंकीस ॥ वांअमुयदू
 ट ॥ कनामन्यास ॥ उंकीस ॥ वांअमनोयनमः ॥ उंकीस ॥ वांअम
 लेयनमः ॥ उंकीस ॥ वांअलयनमः ॥ उंकीस ॥ वांवांवांवांवां
 ॥ वांधनिवलीधनायनमः ॥ आवाहननादिध्यान ॥ उंविश्वक
 न ॥ सुलेनवा रुतिरसंविश्वतमणीवेष्टुर्वहसंखदुसुखदकव
 नद ॥ नकायालवामदध ॥ गुलेदोवनयद्यनपतिनववायुष्टक
 ॥ धुतंरुदयसुयविगकंयनयनानूनाधिकंरुम्यता ॥ ॥ उंकीस
 स ॥ वांवांवांवांवांवां ॥ वांमलवनयुं निमाल्याच ॥ वांवायनमः

॥ वलि ॥ चलुषउङ्ग ॥ धूपदीपकापसाग ॥ पूजितंयदुति ॥ आदुति ॥
 चलुमूलमकुल ॥ १०८ ॥ पुननावायलस्यमकुल ॥ पूलु ॥ आवायय
 उमानायां निमाल्याचलुय ॥ वा ॥ उंलेहवायान्नयाना
 निताम्वलंनधूलयितं ॥ निमाल्यांशुनंदुर्यपदकं ववागारुया
 ॥ पूजितंयदु निमाल्याति ॥ ॥ निधुष्टिकनमिति ॥ अगम ॥ धीदि ॥

यवधन्यादि ॥ वलिविसर्जने ॥ दद्विधदानं ॥ नानायलस्यमूलमकुल
 पूलु ॥ अतिविसर्जने ॥ विष्णुमकुल ॥ निमाल्या विसर्जने ॥ वा ॥ उं
 लेहवायान्नयानानिर्गति ॥ सर्वम ॥ नक्रियाकालंमयाचलुहवा
 लुया ॥ नूनाधिकंरुगंमारुयविपूलुसदासुम ॥ ॥ पूवाग्निकलुण

पूर्ववलि विमर्शनी ॥ चण्डाय दद ७ ॥ ॥ द्वयसंगमननदीगच्छ ७ ॥ नि
 मालिपूजनरुमो ॥ गमयनलघि ॥ निमालिपूजनदीगच्छ ७ ॥ न्या
 सादिवलिपूजा ॥ चण्डमूलषष्ठ ७ ॥ निचण्डमूलमर्क ७ ॥ वि
 मर्शनीवाक्य ॥ लक्ष्म्याद्यानेति ॥ सर्वभक्तिक्रियाकाण्डेति ॥ निमालि
 नद्यापिवाक्य ७ ॥ वाक्य ॥ गमयिष्येति ॥ सर्वजनस्तान्काय ७ ॥
 ७ ॥ ॥ अथवामूलात्राय कमात्राय ॥ यजमानराजवाक्य ७ ॥ त्वा
 न्काय ७ ॥ नद्यादिद्वारागकाय ७ ॥ निमालिपूजागती ७ ॥ दक
 नपूजा ॥ मय्युज्जयमर्क ७ ॥ ॥ ततः पूर्वयत्नमलुपा
 मागच्छ ॥ यत्नविमर्शनीमयास्ययधकर्मसर्वलुपूजायादाववाल्
 वनमर्थ ७ ॥ लिखावयावयवधन्यादियादावहाममातेकलगाते

स्ववागीर्थलैखवानश्रितिकादियादामर्थ ७ ॥ यत्नविमर्शनीयादाव
 वालववावगीर्थलैखवाकलगातेखवानश्रितिकचन्दनसिन्दु
 वमर्गुलगादीदि ७ ॥ यत्न ७ ॥ कोमात्रियुजन ॥ ततावाक्यलगाजने
 ॥ रत्निलक्ष्मामस्यानिकलुपवाहन विधानसमाप्त ॥ ७ ॥

सन्वत १८५७ ७ ॥ कचदुष्टाति ॥ थोपूर्वका लुलिपुडरुनका लु
 लिनक्षेत्रगलुपुष्टिआ ॥ गुरुस्यतिवासत्र लिखितमिति सद्य
 लुणीमधुसूदनगम ॥ ७ ॥ रुममुलमाक ॥

५२

वृत्तवर्तिचुडिङ्ग धूयदीयादिदधिद्रव्यं नन्दत्वावहिः ४ पसूया ॥
 तत्तानि विष्णुपत्रिणां ॥ द्वात्रिंशच्छ्रद्धा न्यक्तं ॥ ध्यानयवमाषमृग
 म्माकादिकं धत्वा ॥ ॐ स्वकीयासनयूज ॥ ॐ आ धानग्निकि कम
 लासनाय नमः ॥ ॐ कृमासिनाय नमः ॥ ॐ तिस्रस्वकीयासनयूज
 ॥ दत्तस्य दक्षिणरागादिभक्तिकधन्यापविष्णुर्कृत्वा यथा ॥ कृत्वा य
 द्दकद्वेभनवीनावयापि त्रिलिङ्गा ॥ तत्र यच्छ्रद्धा न्यक्तं यच्छ्रद्धा यच्छ्रद्धा
 व यच्छ्रद्धा यच्छ्रद्धा यच्छ्रद्धा यच्छ्रद्धा यच्छ्रद्धा यच्छ्रद्धा यच्छ्रद्धा यच्छ्रद्धा
 लविष्णुकाकापुष्पा यद्विष्णुकाकापुष्पा यद्विष्णुकाकापुष्पा यद्विष्णुकाकापुष्पा
 दत्वा कोलायाम्बनयुग्मनयविधाय तत्र मातुलं गरुलं तथापि विधत्वा

॥युधर्मन०॥शुद्धीयकलर्गपूजय०॥ॐआध्वनागकि कमलासनायन
म०॥ॐवद्विमललायदगकलात्मननम०॥ॐगंगामदावलीजेका
कालिन्दीनिर्मदालिवा॥गंगमतीचन्द्ररागभवसत्रयूसफसागना॥का
वनीत्रवि कालिया मरुतानशामुथस्मता०॥सागनासफमूखाग्रजल
मिर्मानिधिक्नु॥तन०सफधूपज०॥धनमूदयाॐईस०वा॥अ
मतीकृत्वा॥ॐवअमनअमताकृवअमनमालिनसूधदवमल
लायमाईस०॥सूदगनिविश्यायासूदगनिमकुलसूदगनिमूदयिद
नथ०॥तनीयाद्यादिनाथाउलभयचानलविक्रवृद्धायपूज॥मूल
मकुलआयामूर्तिनीनात्रायलतगविन्यास॥आयोनान्नमिवाका
आयावेननसूनव०॥अयनतस्यातायूचनननात्रायलस्म०॥धूप

दीयनेवयादिनावद्वनीकलर्गपूजयित्वामूलमकुल०॥ॐयित्वालक्ष्मी
सत्रस्वतीगनूजदीनमिर्नदगधूपज०॥स्मर्गप०॥ॐनमास्तेन
नाय॥नमास्तेसर्वस्वदीनांआदिकानलमूर्तम॥आय०सर्वगत्रीन
सूजीवनूपनमास्ते॥तनीजोर्वन्यासाधयेतिमांलभधय०॥तगावि
आध्वनरुतत्वा०॥युधर्मयिलुकांलभधय०॥तगाविअस्ययथिशा
दिमकुलसामेनूपक्षितिसुवि०कृमादिवतासुतलंकृन्दयवतोआविनि
याग०॥ॐद्वयचिद्वनसगिलायाध्यामयिद्रासनसूद्विदुजानक
वक्तानीलात्यलसविनीलभं०कायत्रिधनसिचलिकात्रमलि
नआध्वनजिलाध्यात्वाकस्यासदुसदलुगिकोर्गविराद्यन्यासंकुर्या
०॥ॐमल्लुकायनम०॥स्वाधिसूत॥ॐककृयायनम०॥नारो॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ हृदय ॥ ॐ धर्माय नमः॥ दक्ष ॥ ॐ क्लान्त
 नमः॥ वाम ॥ ॐ देवाय नमः॥ दक्ष ॥ ॐ दक्षाय नमः॥ ॐ नृप
 य नमः॥ वाम ॥ ॐ अर्धमाय नमः॥ वक्त्र ॥ ॐ अर्धमाय नमः॥
 ॥ यानि ॥ ॐ अर्धमाय नमः॥ दक्ष ॥ ॐ अर्धमाय नमः॥
 नमः॥ वाम ॥ ॐ सफतिवलयाय नमः॥ सफतिवलयाय नमः॥
 य नमः॥ हृदय ॥ तत्ताय नमः॥ रुक्षाय ॥ ॐ आने नमः॥
 ॐ सवित्ताय नमः॥ ॐ सवित्ताय नमः॥ ॐ यकृतिमयय
 नमः॥ ॐ विकारमयय नमः॥ ॐ यकृतिमयय
 नमः॥ ॐ अर्धमाय नमः॥ ॐ अर्धमाय नमः॥
 ॐ मवद्वि मल्लाय नमः॥ ॐ मवद्वि मल्लाय नमः॥ ॐ मवद्वि मल्लाय नमः॥

ॐ २
 सय धियात्मन नमः॥ ॐ तमसमाहात्मन नमः॥ ॐ आत्मानन नमः॥
 दुर्ग ॥ ॐ अर्धमाय नमः॥ पश्चिम ॥ ॐ अर्धमाय नमः॥ ॐ अर्धमाय नमः॥
 ॐ क्लान्त नमः॥ ॐ अर्धमाय नमः॥ ॐ अर्धमाय नमः॥ ॐ अर्धमाय नमः॥
 नमः॥ ॐ अर्धमाय नमः॥ ॐ अर्धमाय नमः॥ ॐ अर्धमाय नमः॥
 नमः॥ ॐ अर्धमाय नमः॥ ॐ अर्धमाय नमः॥ ॐ अर्धमाय नमः॥
 ॐ अर्धमाय नमः॥ ॐ अर्धमाय नमः॥ ॐ अर्धमाय नमः॥
 ॐ अर्धमाय नमः॥ ॐ अर्धमाय नमः॥ ॐ अर्धमाय नमः॥
 ॐ अर्धमाय नमः॥ ॐ अर्धमाय नमः॥ ॐ अर्धमाय नमः॥
 ॐ अर्धमाय नमः॥ ॐ अर्धमाय नमः॥ ॐ अर्धमाय नमः॥

॥ अ० ध० द० ॥ अ० उ० अ० बा० पि० न० क० ला० ये० न० म० ॥ नि० न० सि० ॥ अ० उ० अ० ॥ अ० म० क०
 ला० ये० न० म० ॥ ना० म० ए० ॥ क० उ० क० म० ह० क० ला० ये० न० म० ॥ द० क० वा० ॥ र० उ० र०
 म० ह० क० ला० ये० न० म० ॥ द० क० क० य० जि० ॥ ग० उ० ग० म० ति० क० ला० ये० न० म० ॥ द० क०
 रु० म० लि० व० ॥ य० उ० य० म० धा० क० ला० ये० न० म० ॥ द० क० रु० सा० मु० लो० ॥ द० उ० द०
 का० कि० क० ला० ये० न० म० ॥ द० क० रु० सा० गु० ति० न० र० ॥ य० उ० य० ल० शी० क० ला० ये० न० म० ॥
 वा० म० वा० ॥ क० उ० क० दू० ति० क० ला० ये० न० म० ॥ वा० म० क० य० जि० ॥ उ० उ० क० ति० क० ला०
 ये० न० म० ॥ वा० म० म० लि० व० ॥ उ० उ० क० ति० ना० क० ला० ये० न० म० ॥ वा० म० रु० सा० मु० लो०
 ॥ अ० उ० अ० सि० दि० क० ला० ये० न० म० ॥ वा० म० रु० स० न० र० ॥ उ० उ० उ० ना० क० ला० ये० न०
 म० ॥ द० क० क० य० ॥ उ० उ० क० पा० लि० क० ला० ये० न० म० ॥ उ० उ० उ० न० य० य० क० ला०
 ये० न० म० ॥ द० क० गु० ॥ उ० उ० उ० न० य० य० क० ला० ये० न० म० ॥ द० क० पा० द० ॥ उ० उ०

नि० ति० क० ला० ये० न० म० ॥ द० क० पा० द० न० र० ॥ ग० उ० ग० का० मि० क० ला० ये० न० म० ॥ वा० म० क०
 य० ॥ उ० उ० उ० व० न० द० क० ला० ये० न० म० ॥ वा० म० क० य० जि० ॥ द० उ० द० दू० ति० ना० क० ला० ये० न० म०
 ॥ वा० म० क० य० जि० ॥ य० उ० य० पु० ति० क० ला० ये० न० म० ॥ वा० म० पा० द० ॥ न० उ० न० दी० घा० कि० ला० ये० न०
 म० ॥ वा० म० पा० द० न० र० ॥ य० उ० य० ती० दू० क० ला० ये० न० म० ॥ द० क० पा० द० ॥ उ० उ० उ० नो० दी०
 क० ला० ये० न० म० ॥ वा० म० पा० द० ॥ उ० उ० उ० अ० रु० या० क० ला० ये० न० म० ॥ य० उ० य० ॥ उ० उ० उ० नि० द०
 क० ला० ये० न० म० ॥ ना० म० ॥ म० उ० म० म० की० क० ला० ये० न० म० ॥ उ० द० य० ॥ य० उ० य० दू० धा० क० ला०
 ये० न० म० ॥ रु० दि० ॥ न० उ० न० का० पि० ना० क० ला० ये० न० म० ॥ द० क० य० जि० ॥ ल० उ० ल० क्रि० या०
 क० ला० ये० न० म० ॥ क० क० दि० ॥ व० उ० व० उ० ल० क० ला० ये० न० म० ॥ वा० म० पा० द० ॥ ग० उ० ग० म०
 लू० नू० प० क० ला० ये० न० म० ॥ रु० दा० दि० द० क० दा० ॥ य० उ० य० यी० ला० क० ला० ये० न० म० ॥ रु०
 दा० दि० वा० म० वा० रु० ॥ म० उ० म० य० ना० क० ला० ये० न० म० ॥ रु० दा० दि० द० क० पा० द० ॥ रु०

٩٥٩

मात्मनेनमः॥ उं यवाय वृषात्मनेनमः॥ उं यवाय बृहदात्मनेनमः॥ उं यवाय ऊर्ध्वकात्मनेनमः॥ उं यवाय सनजात्मनेनमः॥ उं यवाय विक्रात्मनेनमः॥ मनसि॥ उं यवाय गन्धमात्मनेनमः॥ क॥ उं यवाय स्थर्गनात्मनेनमः॥ त्रि॥ उं यवाय नृपगन्धमात्मनेनमः॥ व॥ उं यवाय वसुगन्धमात्मनेनमः॥ वसना॥ उं यवाय गन्धर्वात्मनेनमः॥ यदि॥ उं यवाय धातुगन्धमात्मनेनमः॥ आका॥ उं यवाय व्यावृत्तात्मनेनमः॥ नादा॥ उं यवाय वक्रगन्धमात्मनेनमः॥ डि॥ ॥ गन्धर्वात्मनेनमः॥ उं क्रीं उं नमो नावाय॥ यनमः॥ नि॥ उं क्रीं उं नमो रुद्रगन्धर्वात्मनेनमः॥ ललाट॥ उं क्रीं उं विष्णुवयस्यविष्णुवयस्य॥ ना॥ उं क्रीं उं क्रीं क्रीं लक्ष्मीवसुदेवाय॥ द॥ उं क्रीं उं नमो विष्णुवसुदेवाय॥ महावलाय॥ दधिवास॥ वास॥ उं क्रीं उं वां वासाय॥ वास॥ द॥ उं क्रीं उं क्रीं जानकीवल्लभाय॥ वास॥ वास॥ उं क्रीं उं

702

[illegible]

五



